विचार बिन्दु

जिस तरह रंग सादगी को निखार देते हैं उसी तरह सादगी भी रंगों को निखार देती है। सहयोग सफलता का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। –मुक्ता

बदल रहे भारत का नये वर्ष में प्रवेश

इतिहास में ऐसा समय आता है जब कुछ चीजें सतह पर नहीं बदलतीं, न ही उन स्पष्ट तरीकों से जिन्हें सांख्यिकी या जीडीपी चार्ट से मापा जा सके। वे अपनी पहचान के दायरे में बदलती हैं। इक्कीसवीं सदी के पहले 25 वर्षों की यात्रा पूरी करके कल हम नये साल में प्रवेश कर रहे हैं। यह वह समय है जब भारत अनेक सीमाएं पार कर रहा है। इक्कीसवीं सदी के इस चौथाई हिस्से में इस देश में जबरदस्त मनोवैज्ञानिक बदलाव आया है। यह बदलाव सिर्फ अकादमिक रूपांतरण या बौद्धिक पुनरुत्थान का नहीं है, यह कुछ ज्यादा गहरा, अधिक मौलिक है। भारत की आर्थिक जंजीरें टूट चुकी हैं और अब उसे रोका नहीं जा सकता। इसे हम यहां के युवाओं की आंखों में देख सकते हैं। अब कोई संदेह नहीं है। अब किसी और के प्रगति मॉडल के आगे झुकने की जरूरत नहीं है। अब आत्मविश्वास है, कि हम जानते हैं कि हम कौन हैं। और ऐसा होने के लिए हमें किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं है। सदियों तक भारत दूसरों द्वारा, और खुद यहां के लोगों द्वारा, अपने को शासित, प्रबंधित और निर्देशित देश के रूप में देखा जाता रहा है। विदेशी विचारों और उनके हितों के बोझ तले इसकी अपनी चमक फीकी पड़ती चली गई। इसके अपने मिथक और दर्शन, जो कभी गहन सार्वभौमिक विचारों के उद्गम स्थल थे, उन्हें हीन, पिछड़ा तथा आदिम मान लिया गया। सदियों से भारत एक ऐसी सभ्यता रही जिसे बताया जाता रहा कि उसे अपने बारे में क्या सोचना है। भारत को जिस ढांचे में गढ़ा गया वह सिर्फ़ आर्थिक उपनिवेशन नहीं था, वह एक मनोवैज्ञानिक आधिपत्य भी था। इस तरह भारत न केवल विजेता की छाया में रहा, बल्कि परिभाषा की छाया में भी रहा। ऐसा सिर्फ़ इसलिए नहीं हुआ कि बाहरी लोग आए और यहां शासन किया। बल्कि उन्होंने, खासकर अंग्रेजों ने, भारत कैसा है इसकी पटकथा लिखी। उन्होंने भारत से कहा–"यह आपकी पहचान है, अब दुनिया में यह आपका स्थान है, हमने आपके लिए जो रेखाएं खींची हैं, उनके भीतर ही रहें।" भारत उन कहानियों को दोहराता रहा, जिन्होंने इसे रहस्यवाद की भूमि के रूप में प्रस्तुत किया। पश्चिम ने तय किया कि भारत अनोखा हो सकता है लेकिन उत्कृष्ट नहीं;आध्यात्मिक हो सकता है लेकिन रणनीतिक नहीं; सांस्कृतिक हो सकता है लेकिन शक्तिशाली नहीं। इन कहानियों ने जनमानस में जड़ें जमा लीं। लेकिन एक समय ऐसा आता है जब एक सभ्यता को बाहर से नहीं बल्कि अंदर से एक अलग आवाज़ सुनाई देने लगती है, जो कहती है ये कहानियां कभी हमारी नहीं थीं। वे यह नहीं दर्शातीं कि हम कौन हैं। वह क्षण धमाकेदार नहीं होता। यह दुदुंभी बजाते नहीं आता, लेकिन जब आता है तो सब कुछ बदलना शुरू हो जाता है। और यह समय शुरू हो गया है।

ऐसा मानने वाले कम नहीं हैं कि भारत कभी भी, सच में, सोया नहीं था, वह बस खामोश था। फिर कुछ ऐसा हुआ कि भारतीयों ने दूसरों से अनुमोदन की मांग करना बंद कर दिया। यह मामूली बात लगती है, लेकिन यही सब कुछ है। उन्होंने दूसरों की दृष्टि से देखना बंद कर दिया और घोषणा कर दी कि हम खुद को अपनी दृष्टि से देखेंगे। यही वह क्षण होता है जब सभी बाहरी नियंत्रण समाप्त हो जाते हैं। ऐसा इसलिए नहीं होता कि उपनिवेशवादी चले जाते हैं या राजनेता बदल जाते हैं। यह तब होता है जब लोग आत्मबल से कहते हैं 'हम हैं।' यह आत्मविश्वास इस देश के लोगों को महात्मा गांधी ने दिया। उपनिवेशी शासन ने भारत पर नियंत्रण तब ही खोदिया था जब गांधी के नेतृत्व में भारतीय मन ने कहा कि हम आपके अधीन नहीं हैं। इसे देश के करोड़ों लोगों ने यह महसूस किया और सत्य और अहिंसा का आत्मबल पाया। भारत का वही आत्मबल अब आजादी के इतने वर्षों बाद खुलकर दिख रहा है जिसमें यह देश–दुनिया द्वारा परिभाषित नहीं किया जा रहा है। यह खुद को परिभाषित कर रहा है। आज उसके वैज्ञानिक न केवल दुनिया की डिजिटल प्रौद्योगिकियों के प्रमुख संस्थानों को संचालित कर रहे हैं बल्कि अंतरिक्ष विज्ञान में दुनिया की होड कर रहे हैं। विश्व मंच पर स्वीकार किए जाने के लिए किसी और की तरह दिखने, काम करने, बोलने और सपने देखने के दबाव को झेलने वाले भारत बदल गया है। इस मनोवैज्ञानिक बदलाव में अहंकार या श्रेष्ठता का भाव नहीं है। यह वह समय है जब लोगों को एहसास हो रहा है कि अब वे तीसरी दुनिया नहीं है, जो पहली दुनिया की समस्या हो। वे एक उपस्थिति हैं जिन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए। उनकी परंपराएं अप्रचलित नहीं हैं, बल्कि कालातीत हैं, सनातन है; उनकी भाषाएं बोझ नहीं बल्कि पुल हैं; उनकी जटिलता अराजकता नहीं बल्कि एक तरह की व्यवस्था है जिसे दुनिया अभी तक पूरी तरह से नहीं समझ पाई है। परिवर्तन का यह समय एक तरह का आध्यात्मिक विद्रोह है। आज ऐसा नया भारत बन रहा है जिसे दुनिया परिभाषित नहीं कर पा रही है, क्योंकि अब दुनिया भारत का एक ऐसा संस्करण देख रही है जो गर्व करने की किसी से अनुमति नहीं मांगता है। यह केवल धारणा में बदलाव नहीं है, यह रुख में बदलाव है। भारत दुनिया से यह नहीं पूछ रहा है कि वह कहां फिट बैठता है। वह खुद परिभाषित कर रहा है कि वह कहां खड़ा है। यह उसके आत्म–सम्मान की वापसी का समय है। यह 140 करोड़ से ज्यादा लोगों की उस सामूहिक अपेक्षा का शांत और ज्वलंत अहसास है कि अब उन्हें अपने अस्तित्व के लिए किसी की अनुमति की जरूरत नहीं है। भारत आज अपनी कहानियां फिर से लिख रहा है। यह अनुमोदन की प्रतीक्षा नहीं कर रहा है। यह मान्यता की मांग नहीं कर रहा है। यह अंततः अपने स्वयं के आख्यान में बोल रहा है। इक्कीसवीं सदी की पहली चौथाई में भारत की वैश्विक भूमिका बदली हुई हैं। वह अब केवल वैश्विक घटनाओं का दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय भागीदार और कई मामलों में नेतृत्वकर्ता बन रहा है। मौन भारत की वैश्विक कूटनीति है। वह शांत है लेकिन अडिग है। यह उधार की महत्वाकांक्षा नहीं है। वह जैविक है। वह घरेलू है और वह अटूट है। भारत अब केवल दुनिया पर प्रतिक्रिया नहीं कर रहा है, यह इसके साथ शर्तें तय कर रहा है। इसकी नीतियां मुखर हैं, इसकी साझेदारियां रणनीतिक हैं। इसकी भौतिक, मनोवैज्ञानिक, कूटनीतिक सीमाएं दृढ़ हैं क्योंकि यह जानता है कि इसके पास क्या है। किन्तु इस नये भारत का उदय सभी के लिए आरामदायक नहीं है। बहुतेरे लोग ऐसा सोचते हैं कि ऐसा नहीं होना चाहिए था। ऐसे लोग भी हैं जो पुराने संस्करण को पसंद करते हैं। इक्कीसवीं सदी की पहली चौथाई जब इतिहास के पन्नों में दर्ज हो रही है तब हम पाते हैं कि यह कालखंड केवल समय का प्रवाह नहीं था, बल्कि भारत के लिए गहरे सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी और राजनीतिक रूपांतरण का दौर है।

आज ऐसा नया भारत बन रहा है जिसे दुनिया परिभाषित नहीं कर पा रही है, क्योंकि अब दुनिया भारत का एक ऐसा संस्करण देख रही है जो गर्व करने की किसी से अनुमति नहीं मांगता है। यह केवल धारणा में बदलाव नहीं है, यह रुख में बदलाव है। भारत दुनिया से यह नहीं पूछ रहा है कि वह कहां फिट बैठता है। वह खुद परिभाषित कर रहा है कि वह कहां खड़ा है। यह उसके आत्म-सम्मान की वापसी का समय है।

देश जब नये साल में प्रवेश कर रहा है, तब यह समय केवल उत्सव का ही नहीं, बल्कि आत्ममंथन और भविष्य की दिशा तय करने का भी है। यह समय यह प्रश्न पूछने का भी है कि भारत जहां पहुंचा है, वहां किन चुनौतियों से जूझ रहा है और आने वाले वर्षों में उसे कौनसी राह चुननी है? इस सवाल का जवाब खोजना है कि विकास की इस कहानी में असमानता का साया क्यों बना हुआ है? सशक्त भारत अपने आर्थिक विकास के फल समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए वह क्या जतन कर रहा है? इक्कीसवीं सदी की चौथाई सदी पूरी होना केवल एक समय–सीमा नहीं, बल्कि एक पड़ाव है। नये साल में भारत के पास अवसर है कि वह बीते अनुभवों से सीखे और भविष्य के लिए स्पष्ट दृष्टि बनाए। शिक्षा में गुणवत्ता, स्वास्थ्य में समावेशन, रोजगार में सम्मान, लोकतंत्र में विश्वास और पर्यावरण में संतुलन को आने वाले समय में भारत की पहचान बनाना है। नये साल का यह संकल्प केवल सरकारों का नहीं, बल्कि हर नागरिक का होगा तब बात बनेगी। भारत का भविष्य केवल नीतियों से नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना और साझी जिम्मेदारी से बनेगा। इक्कीसवीं सदी की अगली तीन चौथाई सदी भारत के लिए निर्णायक होगी। सामाजिक सौहार्द, समावेशन और आपसी विश्वास को मजबूत करना आने वाले वर्षों की सबसे बड़ी आवश्यकता होगी। भारत की विविधता उसकी शक्ति तब ही है,जब हम उसे विभाजन का कारण न बनने दें। नये साल में हमें पुरानी स्मृतियों में नहीं जाना है। किसी स्वर्णिम युग को फिर से जीने की भी कोशिश नहीं करनी है। हमें किसी की नकल करने की बजाय अपने खुद अपने मूल के रूप में विकसित करना है और ऐसा भवन बनाना है जिसमें विचारों की खूब खिड़कियां हों और वे खुली रहें। हम विचारों पर बहस करें, झगड़ें नहीं। महात्मा गांधी ने हमें ऐसा आत्मबल दिया है जो लोगों को अपना सिर ऊंचा करके चलने का तरीका सिखाता है। भारतियों की सबसे बड़ी पूंजी यह याद रखने की है कि वे जानते हैं कि वे एक सभ्यता हैं, जो विजय से नहीं बल्कि निरंतरता से परिभाषित होती है, नियंत्रण से ग्रस्त नहीं है, बल्कि सह–अस्तित्व से परिभाषित होती है; सत्य और अहिंसा से परिभाषित होती है। इसी समझ के साथ नये वर्ष में हमारा प्रवेश ही शुभ होगा।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

नववर्ष 2026 को सुखमय, स्वस्थ और खुशहाल बनाने के आसान उपाय

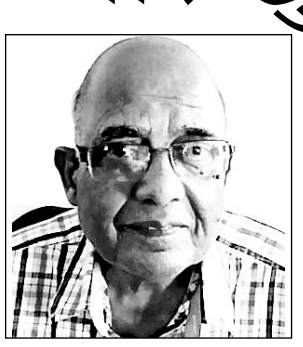

डॉ. जे.के. गर्ग

नव वर्ष में अपने जीवन को सुखी खुशहाल स्वस्थ आनन्द दायक मनाने के लिये निम्न उपायों को अपनाए। खुशी आदमी के भीतर ही होती है तथा रिलेक्स मन ही प्रगति और खुशहाली का प्रवेशद्वार है। वास्तव में सभी इन्सान और अन्य प्राणी अविनाशी पवित्र और शांती प्रिय आत्मायें हैं और परमपिता परमात्मा की संतान है जिसका कोई रंग नहीं ना ही कोई धर्म ना ही कोई लिंग है।

धर्म का चेहरा तो उनको समाज ने दिया है। याद रक्खें कोई धर्म आपस में घृणा और वैर करना नहीं सिखाता है। आपस में वैमनस्य फैलाने का काम तो तथाकथित धर्म के स्वार्थी ठेकेदार ही करते हैं। सद्भाव के लिये हर इंसान को बापूजी के भजन 'ईश्वर–अल्लाह एक ही नाम, सबको सन्मति दे भगवान' का सच्चे दिल से पालन करें।

भारत विभिन्नता में एकता की अद्भुत मिसाल है। यहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बोध, जैन, फ़ारसी अपनी–अपनी आस्था अनुसार पूजा–अर्चना करते हैं। एक–दूसरों के पर्व में भाग लेते हैं। भाई–भाई के रूप में रहते हैं। धर्म निरपेक्षता हमारे संविधान के मुख्य स्तम्भ है।

सुखी जीवन के लिए सभी को स्नेह, प्रेम और प्यार दें। याद रखे कि आशाओं का जीवन काल अनंत होता है वहीं दूसरी तरफ निराशा और असफलता का जीवनकाल अल्प एवं छोटा होता है इसलिए निराशा और असफलताओं के निराशाजनक वातावरण में आशा का दीपक जलाये रखें और घनघोर अंधकार मे भी प्रकाश की किरणें की खोज करें। अपने आस–पास के लोगों के के दुःखदर्द एवं पीड़ा को समझें, उनकी मदद करें उनके दुःख–दर्द, तकलीफों को दूर करने में मदद करें और सदैव करुणामय संवेदनशील बने रहें। निराशा को कभी भी अपनी सोच के नजदीक नहीं आने दे। अपने जीवन में नकारात्मक सोच को छोड़ करके सकारात्मकता को अपनी सोच का अभिन्न अंग बनायें, निराशा की भावना को सदा के लिये तिलांजली दें। छोटी से छोटी बातों में भी अच्छाई को ढूढें। अन्धकार मे भी आशा का दीप जलाए रखे। जब कभी परोपकार चालू करें तो यह तय कर ले कि इससे किसी का नुकसान तो नहीं होगा। अपने निजी हितों को ताक पर रख कर परोपकारी बन दूसरों के दुःख कम करे।

याद रक्खे कि जीवन में खुशी प्राप्त करने के लिये दूसरों को भी यथाशक्ति खुश रखने का प्रयास करना जरूरी है मित्रों सहकर्मियों के अच्छे काम की प्रशंसा करे। साल में हर परिस्तिथी में शांत और रिलैक्स्ड रहूंगा। रिलेक्स रहने के लिये गहरी और लम्बी श्वास ले ओर छोड़े।.अपने मन के अंदर इस बात को धारण कर लें कि ख़ुशी मेरा जन्मसिद्ध मौलिक अधिकार है। चाहे कुछ भी हो जाए मैं दिन भर खुश रहुगां। जब कभी कोई अनहोनी घटना घट भी जाये तब भी अपने आप को सकारात्मक सोच पर केन्द्रित करते हुयें अपने आप को समझाये कि मेरे साथ इससे भी बुरा हो सकता था, प्रभुजी को धन्यवाद दें। याद रखे कि अगर अग्रज अपनों से छोटे को स्नेह और प्यार देंगे तो छोटे भी आप को जरुर सम्मान देंगे और आप का आदर भी करंगे। बच्चों को उनके अपने हिसाब से जीने का मौका दे, उनके कार्यकलापों में टीका–टिप्पणी नहीं करें। आप उन्हें सलाह तभी ही दें जब वे आप से सलाह मांगे।

क्रोध एक माचिस की तिली के समान है जो दूसरों को जलाने के पहिले खुद ही जलती है। जब कभी आपको गुस्सा आ जाये तो तब अपने मन को समझाये कि क्रोध करके मैं खुद का ही नुक्सान कर रहा हूँ। अपने पड़ोसी से नियमित बातचीत करे, उनके प्रति सद्भावना रखते उनके खुशी के लिये प्राथना करें। उनके सुख को बढाने और तकलीफों को कम करने की कोशिश करें इससे आपकी खुशियाँ कई गुणा बढ़ जायेगी और आपके पारस्परिक सम्बन्ध मधुर रहेगें। खुशी प्राप्त करने का एक सूत्र यह भी है की बिना किसी चाहत के दूसरे के अच्छे काम की बार बार उनके सामने और उनकी पीठ पीछे प्रशंसा करें। संभव है कि यदाकदा आपका लालच कुछ समय के लिये आपकी सम्पती को बढा भी दे, किन्तु यह भी याद रखे कि अधिक सम्पति आपके लालच ओर आकांशा को कई गुणा बढा देगी लालच और गलत तरीके से अर्जित यह कमाई आपको अभिमानी बना कर आपको गलत रास्ते पर ले जाकर आपकी मानसिक शांती और आपके स्वास्थ्य को खराब कर देगी।

सच्चाई तो यही है कि जो भी आप के पास है उससे आप सदैव खुश रहे। सुख–सुविधा के लिये भौतिक साधन अगर आपके पास उपलब्ध नहीं तो उन्हें हासिल करने लिये ख्याली ख्वाव बनाने के बजाय उन्हें प्राप्त करने के गम्भीर कोशिश कर मेहनत करें। याद रखे कोशिश करने वालों कभी भी हार नहीं होती हैं।

किताब पढ़ना एवं उनका सतत अध्ययन करना सभी के लिए जीवन की सभी अवस्थाओं में सबसे अच्छा और सबसे सस्ता ज्ञानवर्धक साधन है। सुखमय जीवन जीने के लिये अपना लक्ष्य निर्धारित करें, उद्देश्यहीन जीवन नहीं जिए। ईर्ष्यालु नहीं बने,दूसरों की सफलता पर खुश हों, उन्हें बधाई दें। अपने ईगो को छोड़े, मैं मैं मैं की रट नही लगायें, आपका ईगो आपको नकारा बनाके आपको हीन् भावना से ग्रस्त कर देगा। अपने ईगो के बजाय अपने मन से कहें कि मैं मुझें सौपें गये सारे काम सफलतापूर्वक कर सकता हूँ। आराम तलब जिन्दगी जीने के बजाय कर्मशील बने, निष्काम भाव से तलीनता के साथ कर्म करें। अपनी गलतियों को मानने में चूक नहीं करें क्योंकी आदमी को अपनी गलतीयों से जीवन का बड़ा सबक सीखने को मिलता है।

याद रखे असफलता ही सफलता की पहली सीढ़ी है। दूसरों की गलतियों के लिये उन्हें माफ़ करें, फॉरगिव एन्ड फॉरगेट की निती को अपनायें। जीवन में घटित अवांचित दुर्भाग्यपूर्ण कष्टपूर्ण घटनाओं को याद नहीं रक्खें उन्हें भूल जाएँ वरन विगत वर्षों की सुखद स्म्रतियों को याद कर मुस्करायें। याद रक्खें कि भावात्मक होकर उत्तेजना में लिये गये निर्णय अधिकतर असफल ही होते है। चिंतन कर सोच–विचार करके शांत मन से विवेक पूर्ण निर्णय लें। किसी से कोई अपेक्षा नहीं रक्खें और किसी की भी उपेक्षा भी नहीं करें।

चिन्ता चिता से भी बुरी होती है, चिंता आपके जीवन के हर क्षण को दुखमय बना देगी, और सफलता के सारे दरवाजे भी बंद कर देगी वहीं चिंता आपके व्यकित्त्व को भी हानि पहुंचेगी, आप अपना आत्मविश्वास पूरी तरह से खो देंगे, आप बीमारियों को निमंत्रण देगें और अस्वस्थ हो जायेगे। इसलिए चिंता करने के बजाय आत्मचिंतन करें। आध्यात्मिक इन्सान बने। निरंतर मेडीटेसन का अभ्यास करें। मूर्खों से वाद–विवाद और तर्क–वितर्क करने से बचे। अपने आत्मसम्मान से कोई समझौता नहीं करें किन्तु आत्म अभिमानी भी नहीं बनें। स्वाभिमान के साथ जीये। अपने निकटतम परिचितों एवं स्वजनों की भावनाओं, आवश्यकताओं का ध्यान रखें, उनकी अनदेखी नहीं करें। डर और शक के साये में नहीं जीये क्योंकि हकीम लुकमान के पास भी शक–शंका का कोई इलाज नहीं है। निर्विवाद रूप से डर और शक आदमी की प्रगति और उन्नति में सबसे बड़ी बाधा है। याद रखें द्रोपदी के दुर्योधन पर कसे तंज और व्यंग ने ही महाभारत के युद्ध को जन्म दिया था इसीलिए कभी भी कटु शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करें। किसी पर कभी भी तंज नहीं कसें। हमेशा मीठी वाणी बोले। अच्छा बोले अच्छा सुने और अच्छी वाणी बोले। दूसरों के कार्यों की आलोचना करने की जगह उनके अच्छे कामों की प्रशंसा उनके सामने और उनकी पीठ पीछे करें। जो जैसा है उसे उसी रूप में स्वीकार करें। दूसरों के विचारों का भी सम्मान करें, उन्हें आदर दें। सभी को बिना शर्त स्नेह और प्यार दें।

कोई भी काम को अंजाम देने से पूर्व यह मालुम कर लें कि आपके काम से किसी का अहित तो नहीं होगा। अगर आप के प्रस्तावित काम से किसी को कष्ट या क्षति हो रही हो तो उस काम को नहीं करें। हर एक व्यक्ति का अभिवादन मुस्करा कर करें। खुद हसें और दूसरों को भी हंसाये लाफ्टर को अपने दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाये। अपने चेहरे को प्रफ्फुलित और सोम्य बनाये रक्खें। खुद जियें और अन्य को भी सुखमय जीवन जीने दें। अपनी असफलताओं के लिये दूसरों को दोष नहीं दें। जब कभी कोई आपका काम करें या आपकी मदद करें तो उन्हें धन्यवाद जरुर दें। अमावस्या की काली रात के बाद पूर्णिमा की शीतल चांदनी आती है उसी तरह जीवन में दुःख के बाद सुख अवश्य आता है वास्तव में तकलीफ और दुःख के समय में ही हमको अपने हितेषी और सच्चे दोस्त की पहचान होती है तथा हमें आत्मचिंतन का भी मोका मिलता है। संतो और महापुरुषों की शिक्षा का पालन करें। परिवार और बच्चैं के साथ समय बिताए।

–डॉ. जे.के.गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

जैसलमेर: सुकून और शांति की सुनहरी धरा

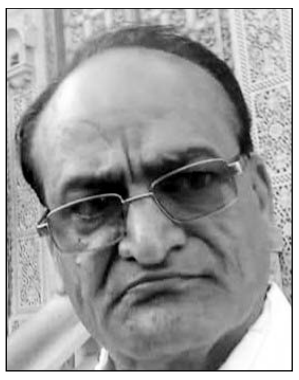

अचलदास डांगरा

राजस्थान के पश्चिमी छोर पर थार मरुस्थल के हृदय में बसा जैसलमेर केवल एक शहर नहीं, बल्कि सुकून का दूसरा नाम है। इसे स्वर्ण नगरी कहा जाता है, जहाँ की सुनहरी रेत और पीले पत्थरों से बने महल सूर्यास्त के समय एक जादुई शांति का अहसास कराते हैं।

रेत के टीलों में छिपा मौन : जैसलमेर की सबसे बड़ी विशेषता यहाँ का सन्नाटा है। सम और खुहड़ी के मखमली धोरों पर जब ठंडी हवाएं चलती हैं, तो वे मन की सारी व्याकुलता को सोख लेती हैं। मीलों तक फैले रेत के टीलों पर बैठकर डूबते सूरज को देखना एक आध्यात्मिक अनुभव जैसा है, जो भागदौड़ भरी जिंदगी से दूर सुकून के पल देता है।

इतिहास और वास्तुकला का संगम : जैसलमेर का सोनार किला दुनिया के उन दुर्लभ किलों में से एक है जहाँ आज भी आबादी निवास करती है। इसकी संकरी गलियों में घूमते हुए समय जैसे ठहर सा जाता है। यहाँ की नक्काशीदार हवेलियाँ, जैसे पटवों की हवेली और सालमसिंह की हवेली, कारीगरी का ऐसा नमूना पेश करती हैं कि देखने वाला टकटकी लगाए रह जाता है। इन पत्थरों पर उकेरी गई बारीकियाँ मनुष्य के धैर्य और शांति का प्रतीक हैं।

जैसलमेर की फिजाओं में लोक संगीत का वास है। जब यहाँ के लोक कलाकार कामायचा और खड़ताल पर पधारो म्हारे देस की तान छेड़ते हैं, तो वह संगीत सीधे रूह को छूता है। गड़ीसर झील के किनारे बैठकर लोक संगीत सुनना एक ऐसा सुकून देता है जिसे शब्दों में पिरोना कठिन है। प्रदूषण और शोर से मुक्त यहाँ का आसमान रात के समय सितारों की चादर ओढ़ लेता है। रेगिस्तान के बीच कैंपों में रुकना और खुले आसमान के नीचे तारों को निहारना शहर की चकाचौंध से दूर एक शांत मानसिक शांति प्रदान करता है। जैसलमेर वह धरा है जहाँ पहुँचकर इंसान खुद से मिलता है। यहाँ की सादगी, अतिथि सत्कार और शांत वातावरण हर आगंतुक के हृदय को छू लेता है। यदि आप जीवन की भागदौड़ से थककर कुछ पल सुकून के बिताना चाहते हैं, तो जैसलमेर की यह सुनहरी धरा आपका बाहें फैलाकर स्वागत करती है।

–अचलदास डांगरा,
वरिष्ठ पत्रकार।

जोधपुर व भगत की कोठी रेलवे स्टेशन प्रतिष्ठित ब्रांड स्टोर्स के लिए प्रस्तावित

'इस नवाचार के अंतर्गत यात्रियों को प्रसिद्ध राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय ब्रांड्स के विविध खाद्य विकल्प रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध कराए जाएंगे'

जोधपुर, (कासं)। रेलवे बोर्ड के नए दिशा–निर्देशों के तहत यात्रियों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जोधपुर व भगत की कोठी रेलवे स्टेशनों को प्रीमियम ब्रांड कैटरिंग आउटलेट्स एवं अन्य प्रतिष्ठित ब्रांड स्टोर्स के लिए प्रस्तावित किया गया है। रेलवे की इस पहल का उद्देश्य रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों को प्रतिष्ठित, भरोसेमंद एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य व अन्य ब्रांडों की बेहतर सुविधा उपलब्ध कराना है।

उत्तर–पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल के सीनियर डीसीएम हितेश यादव ने बताया कि इस नवाचार के अंतर्गत यात्रियों को प्रसिद्ध राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय ब्रांड्स के विविध खाद्य विकल्प रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध कराए जाएंगे। दिशा–निर्देशों के तहत प्रीमियम ब्रांड स्टोर खोलने की भी अनुमति दी गई है, जिसके अंतर्गत बड़े एवं प्रतिष्ठित ब्रांड्स को सीधे रेलवे स्टेशन परिसर में स्थापित किया जा सकेगा। रेलवे द्वारा प्रारंभिक रूप से जोधपुर एवं भगत की कोठी स्टेशनों को प्रीमियम ब्रांड कैटरिंग स्टोर व अन्य ब्रांड स्टोर के लिए प्रस्तावित किया गया है। इसके अतिरिक्त जोधपुर मंडल के अन्य स्टेशनों पर भी इच्छुक पक्ष मंडल कार्यालय से संपर्क कर ऐसे स्टोर खोलने के लिए आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि ये ब्रांड स्टोर सीधे संबंधित पार्टी को ही आवंटित किए जाएंगे तथा इन्हें सबलेट करने की अनुमति नहीं होगी।

■ दिशा-निर्देशों के तहत प्रीमियम ब्रांड स्टोर खोलने की भी अनुमति दी गई है, जिसके अंतर्गत बड़े एवं प्रतिष्ठित ब्रांड्स को सीधे रेलवे स्टेशन परिसर में स्थापित किया जा सकेगा

यादव ने बताया कि इस पहल से यात्रियों को उच्च गुणवत्ता, बेहतर स्वच्छता मानकों एवं विश्वसनीय खान–पान विकल्प उपलब्ध होंगे, साथ ही रेलवे स्टेशनों की समग्र छवि, सेवा स्तर एवं यात्री संतुष्टि में भी उल्लेखनीय सुधार होगा। साथ ही यह पहल ई–ऑक्शन के माध्यम से लागू की जाएगी तथा सबलेट की अनुमति नहीं होगी। इससे यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिलने के साथ स्टेशन की छवि में भी सुधार होगा। रेलवे की कैटरिंग पॉलिसी–2017 में संशोधन करते हुए प्रीमियम ब्रांड कैटरिंग आउटलेट्स को कैटरिंग स्टॉल की चौथी श्रेणी के रूप में सम्मिलित किया गया है। इन प्रीमियम कैटरिंग आउटलेट्स का आवंटन मनोनयन के आधार पर नहीं किया जाएगा, बल्कि मौजूदा ई–ऑक्शन नीति के अंतर्गत पूर्णतः पारदर्शी प्रक्रिया के माध्यम से किया जाएगा। प्रीमियम ब्रांड कैटरिंग आउटलेट्स का लाइसेंस कार्यकाल अन्य कैटरिंग स्टॉलों की भांति पांच वर्ष का होगा। न्यूनतम लाइसेंस शुल्क का निर्धारण रेलवे की वर्तमान कैटरिंग पॉलिसी के प्रावधानों के अनुसार किया जाएगा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 31 दिसम्बर, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, कृत्तिका नक्षत्र रात्रि 1:30 तक, साध्य योग रात्रि 9:13 तक, बव करण दिन 3:24 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 9:23 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–धनु, चन्द्रमा–मेष, मंगल–धनु, बुध–धनु, गुरू–मिथुन, शुक्र–धनु, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। आज पुत्रदा एकादशी व्रत वैष्णवों का है। महापात योग दिन 10:00 तक है। आज नववर्ष पूर्व संध्या है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:55 तक, शुभ 11:12 से 12:30 तक, चर 3:05 से 4:22 तक, लाभ 4:22 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:40

मेष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये–पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।